महाकुम्भ मेला, प्रयागराज का बदलता परिदृश्यः एक समाज शास्त्रीय अध्ययन

योगेन्द्र प्रसाद त्रिपाठी, नीलम त्रिपाठी एवं प्रगति शुक्ला,
https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.214

सारांश–

उत्तर प्रदेश का प्रयागराज जनपद जो अपनी धार्मिक क्रियाकलापों के लिए जाना जाता है चाहे पवित्र नदियों (गंगा, यमुना, सरस्वती) का संगम हो या ऋषि भारद्वाज का आश्रम व लेटे हनुमान जी का मन्दिर। माँ गंगा के किनारे प्रत्येक वर्ष माघ मेला होता है तो प्रत्येक 6 वर्ष में अर्द्धकुम्भ और 12 वर्ष में महाकुम्भ का आयोजन किया जाता है। जहाँ पर देश विदेश के श्रद्धालुओं का आगमन होता है। परन्तु 2025 में माघ के महीने में जो वृहद महाकुम्भ होने वाला है वह अपने आप में अनूठा व सर्वमंगलकारी है। वृहद इसलिए क्योंकि 144 वर्ष के बाद ये संयोग बन रहा है। कुम्भ मेले का उल्लेख महाभारत के वन पर्व में है। रामचरित मानस के किष्किंधा काण्ड में भी कुम्भ मेले का वर्णन है।

मुख्य शब्द– महाकुम्भ मेला, प्रयागराज, गंगा, यमुना, सरस्वती, संगम।

प्रस्तावना– कुम्भ का शाब्दिक अर्थ 'घड़ा, सुराही, बर्तन है, पौराणिक कथाओं में यही अमरता (अमृत) कहा गया है।

प्रयागराज को तीर्थ स्थलों का राजा[1] कहा जाता है[2]। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने अपना प्रथम यज्ञ भी यहीं किया था[3]। कुम्भ मेले के बारे में कई पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। बताया जाता है कि समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से कुछ अमृत की बूंदें गिरीं और ये अमृत की बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों पर गिरी थीं – (1) प्रयागराज – गंगा, यमुना, सरस्वती के संगम में (2) हरिद्वार–गंगा में (3) उज्जैन – क्षिप्रा नदी में (4) नासिक – गोदावरी नदी में। इन्हीं 4 स्थानों पर कुम्भ मेला लगता है और खगोल की गणना देखी जाए तो माघ मेला मकर संक्रांति के दिन से प्रारम्भ होता है। यहाँ स्नान करना साक्षात् स्वर्ग का दर्शन माना जाता है तथा इसके जल को अमृत तुल्य[4]। ऋग्वेद में इस प्रकार के कुम्भ मेले का मतलब (अर्थ) अमरत्व का मेला कहा गया है।

कुम्भ मेले का आयोजन राशियों पर निर्भर करता है। जब बृहस्पति वृषभ राशि में प्रवेश करते हैं और सूर्य मकर राशि में तब कुम्भ मेले का आयोजन प्रयागराज में किया जाता है[5]। जब सूर्य मेष राशि और बृहस्पति कुम्भ राशि में प्रवेश करते हैं तब कुम्भ मेले का आयोजन हरिद्वार में किया जाता है। जब सूर्य और बृहस्पति का सिंह राशि में प्रवेश होता है तब यह मेला नासिक में मनाया जाता है। जब बृहस्पति सिंह राशि में और सूर्य देव मेष राशि में प्रवेश करते हैं तब कुम्भ मेले का आयोजन उज्जैन में किया जाता है।

हर तीसरे वर्ष कुम्भ मेले का आयोजन होता है। गुरु ग्रह एक राशि में एक साल तक रहता है और हर राशि में जाने में लगभग 12 वर्षों का समय लग जाता है। इसीलिए हर 12 साल बाद उसी स्थान पर कुम्भ मेले का आयोजन किया जाता है। निर्धारित चार स्थानों में अलग–अलग स्थान पर हर तीन साल में कुम्भ मेला लगता है। प्रयाग के कुम्भ मेले का धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व है[6]। 144 वर्ष बाद यहाँ पर महाकुम्भ का आयोजन होता है।

आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या
पूर्व सदस्य, बाल न्यायालय बोर्ड, फैजाबाद
शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या

कुम्भ मेला 5 प्रकार का होता है। पहला माघी कुम्भ मेला[7], जो प्रतिवर्ष केवल प्रयागराज में माघ महीने में आयोजित किया जाता है। दूसरा कुम्भ मेला, जो प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक तथा उज्जैन में हर तीन साल में आयोजित किया जाता है। तीसरा अर्द्ध कुम्भ मेला, जो भारत में केवल दो स्थानों यानि हरिद्वार एवं प्रयागराज में हर छः साल में आयोजित किया जाता है। चौथा पूर्ण कुम्भ मेला, जो हर 12 साल में प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक और उज्जैन, इन चार स्थानों पर बारी–बारी से आयोजित किया जाता है। पाँचवां महाकुम्भ मेला, जो प्रत्येक 144 वर्षों में या 12 कुम्भ मेले के बाद केवल प्रयागराज में आयोजित किया जाता है।

वैदिक मान्यता से तो कुम्भ मेला समुद्र मंथन से शुरु हुआ[8] परन्तु प्रयागराज (पूर्व में नाम इलाहाबाद) में कुम्भ मेले का श्रेय 8वीं सदी के संत आदि शंकराचार्य को दिया जाता है। 2025 में होने वाला महाकुम्भ डिजिटल महाकुम्भ के रूप में घोषित है जो प्रयागराज के परिदृश्य को बदल देगा, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

महाकुम्भ का यह आयोजन धार्मिक व सांस्कृतिक भावनाओं से ओत–प्रोत करने वाला है। इसके अंतर्गत छः मुख्य स्नान पर्व – पौष पूर्णिमा, मकर संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, माघी पूर्णिमा तथा महाशिवरात्रि होते हैं। इस बार पौष पूर्णिमा 13 जनवरी, मकर संक्रान्ति 14 जनवरी, मौनी अमावस्या 29 जनवरी, बसंत पंचमी 03 फरवरी, माघी पूर्णिमा 12 फरवरी, महाशिवरात्रि 26 फरवरी को पड़ रहे हैं। 2025 के महाकुम्भ को दृष्टिगत करते हुए राज्य में महाकुम्भ क्षेत्र को नया जिला घोषित कर दिया गया है जो उत्तर प्रदेश का 76वां जिला बन गया है जिसमें प्रयागराज की 4 तहसीलों के 67 गाँवों को सम्मिलित किया गया है[9]।

प्रयागराज में चार कॉरिडोर समेत 600 परियोजनाओं को लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा किया गया है। विश्व के सबसे बड़े धार्मिक संगम महाकुम्भ में चैट वाट व ए आई जैसी अत्याधुनिक तकनीक का उपयोग हुआ है। आने वाले श्रद्धालुओं को उच्चस्तरीय व विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इसी तकनीक से 2025 में पहली बार ए आई जनरेटिव चैट वाट, जो आने वाले श्रद्धालुओं को 10 से अधिक भाषाओं में जानकारी देगा।

एक नजर में प्रयागराज महाकुम्भ 2025–

- कुम्भ मेले का क्षेत्रफल 4,000 हेक्टेयर हैं।
- मेले में 25 सेक्टर हैं।
- मेले में 1,850 हेक्टेयर में पार्किंग की व्यवस्था है।
- मेले में 1,50,000 शौचालयों की व्यवस्था की गई है।
- मेले में 10,000 स्वच्छताकर्मी नियुक्त किये गये हैं।
- मेले में 1,60,000 टेंट लगाये गये हैं।
- मेले में 67,000 एलईडी स्ट्रीट लाइट्स लगायी गई हैं।
- मेले में 66 नए ट्रांसफार्मर लगाए गए हैं।
- मेले में 2,000 सोलर हाइब्रिड स्ट्रीट लाइट्स लगायी गई हैं।

- मेले में 2 नये विद्युत सब स्टेशन बनाए गए हैं।
- मेले में 1,249 किमी0 लम्बी पेयजल पाइपलाइन बिछायी गई है।
- मेले में पीने के स्वच्छ जल के लिए 200 वॉटर एटीएम लगाए गए हैं।
- मेले में 85 नलकूप लगाए गए हैं।
- मेले में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए 7,000 बसें एवं 550 शटल बस चलायी जायेंगी।
- मेले के लिए 7 बस स्टैण्ड बनाये जा रहे हैं।
- मेले में 400 किमी0 में 30 पाण्टून पुल बनाये जा रहे हैं।
- मेले में स्नान आदि के लिए 9 पक्के घाट बनाए जा रहे हैं तथा 12 किमी0 में अस्थाई घाट बनाये जा रहे हैं।
- मेले में श्रद्धालुओं के आवागमन की सुविधा के लिए 7 रिवर फ्रंट रोड बनाई जा रही है।
- श्रद्धालुओं के आवागमन की सुविधा के लिए 14 नए फ्लाईओवर तथा अण्डरपास बनाए गए हैं[10]।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जब 13 दिसम्बर को प्रयागराज आये तो उन्होंने प्रयागराज व महाकुम्भ के बारे में बहुत सुन्दर वक्तव्य कहे –

''महाकुम्भ एकता का महायज्ञ है। प्रयाग वो है जहाँ पग–पग पर पवित्र स्थान है, पग–पग पर पुण्य क्षेत्र है[11]। ये गंगा, यमुना, सरस्वती नदियों का संगम है। इन नदियों के प्रवाह की जो पवित्रता है, इन अनेकानेक तीर्थों का जो महत्व है, महात्म्य है, उसका संगम ये प्रयागराज है[12]। प्रयागराज एक भौगोलिक भूखण्ड ही नहीं है बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव क्षेत्र है।''

प्रयागराज के विभिन्न मंदिरों और पौराणिक स्थलों का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है जिसमें अक्षयवट, सरस्वती कूप, पातालपुरी, बड़े हनुमान जी, द्वादश माधव मंदिर, भारद्वाज आश्रम, नाग वासुकि मंदिर, श्रृंगवेरपुर धाम प्राथमिकता में हैं क्योंकि महाकुम्भ में ये देवस्थल आकर्षण का केन्द्र रहेंगे और प्रयागराज के पुरातन वैभव को वापस लाने के लिए इस वृहद महाकुम्भ में करीब साढ़े छः हजार करोड़ रु0 के बजट की अनेक परियोजनाओं को साकार करने में सरकार जुटी है।

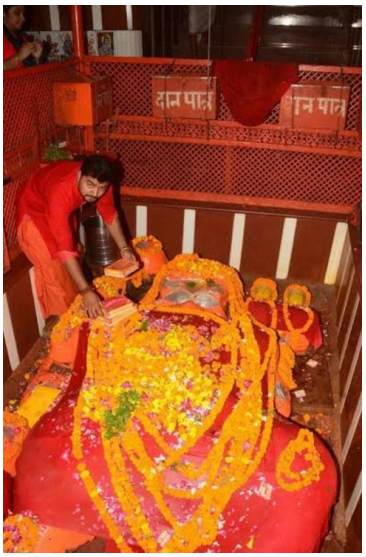

(लेटे हनुमान जी)

(शोधार्थी)

(श्रीराम एवं निषादराज, श्रृंग्वेरपुर)

(सरस्वती कूप)

(ऋषि भारद्वाज आश्रम)

महाकुम्भ मेला 4 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में बसाया जा रहा है। 11 हवाई अड्डों पर विमानों की पार्किंग की जाएगी। ये व्यवस्था 13 जनवरी से लागू होगी। हजारों गाँवों की महिलाओं की जीविका का जरिया बन रहा है महाकुम्भ। इसके लिए बाजारों की व्यवस्था की जा रही है।

इस महाकुम्भ में मेला क्षेत्र में 40 करोड़ श्रद्धालुओं के आने का अनुमान है। सी0सी0 टी0वी0 संग ए आई कैमरों से श्रद्धालुओं की गिनती होगी। पूरे प्रयागराज को आकर्षक ढ़ंग से सजाया जा रहा है। अलोपीबाग चौराहा ही महाकुम्भ मेले का मुख्य द्वार है। यहीं से श्रद्धालु संगम की रेती पर प्रवेश करते हैं। यहाँ पर 101 देवी देवताओं के चित्र बनाए जा रहे हैं। संगम पर जगह–जगह पक्का घाट बनाया जा रहा है। निषादराज उद्यान में प्रभु श्रीराम और निषादराज की गले मिलती आकर्षक प्रतिमा भी बनायी गयी है।

महाकुम्भ जहाँ 33 करोड़ देवी देवताओं का वास एक मास तक रहता है यहाँ करोड़ों तीर्थ यात्री देश विदेश से आते हैं और गंगा मइया में आस्था की डुबकी लगाते हैं और अपने पापों का अन्त करते हैं। वास्तव में यह एक अनूठा समागम है जहाँ साधू, संत, महंत और अनेक श्रद्धालु एक माह (माघ महीना) तक टेन्ट (तम्बू) लगाकर माँ गंगा में प्रातः स्नान, पूजा, अर्चना, सत्संग, दान, पुण्य करते हैं। ऐसा मनोरम दृश्य जिन आँखों को मिलता है वास्तव में वे बहुत ही भाग्यशाली पवित्र आत्माएं होंगी।

समाज में धार्मिकता की भावना को ओत–प्रोत करने वाला है यह महाकुम्भ। सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करने वाला है यह महाकुम्भ और आर्थिक परिदृश्य को सुधारने वाला भी है यह महाकुम्भ।

अध्ययन का उद्देश्य व महाकुम्भ–

मेरे अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1) प्रयागराज की धार्मिक समरसता तथा प्रासंगिकता की व्याख्या करना।
2) प्रयागराज के धार्मिक पर्यटन स्थलों का विवरण प्रस्तुत करना।
3) महाकुम्भ में चलने वाली व वर्तमान परियोजनाओं का विवरण प्रस्तुत करना।

अध्ययन की परिकल्पना–

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1) आगामी वृहद महाकुम्भ द्वारा भारत की वैश्विक पटल पर गौरवशाली पहचान बनाना।
2) महाकुम्भ को धार्मिक विरासत व ऐतिहासिक पर्यटन स्थल के रूप में दृष्टिगत कराना।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। आंकड़ों का संग्रह करने में मैंने प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों से सहायता ली है –

1) प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण साक्षात्कार विधि से किया गया है व स्वयं अवलोकन के द्वारा आंकड़ों को इकट्ठा किया गया है।
2) द्वितीयक आंकड़ों में समाचार पत्र पत्रिकाएं इंटरनेट इत्यादि से आंकड़े. लिए गये हैं।

कुम्भ–स्नान का महात्म्य विभिन्न पुराणों एवं शास्त्रों में वर्णित है। स्नान, कल्पवास एवं पिण्डदान के लिए यह समय सर्वोत्कृष्ट माना गया है। चारों पुरुषार्थ, धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु इस पर्व में विभिन्न योग एवं लग्न उपस्थित होते हैं। अपने जन्म लग्न के अनुसार तीर्थयात्री को अभीष्ट की फलपूर्ति हेतु स्नान का मूहूर्त्त तय करना चाहिए। मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी मुहूर्त्त एक समान है –

तान्येति यः पुमान् योगे सोऽमृततत्वाय कल्पते।
देवा नमन्ति तत्रस्थानं यथा रंक धनाधिपान्।।

जो मनुष्य कुम्भ योग में समष्टि के साथ स्नान करता है वह संसार के मायाजाल से मुक्त हो जाता है। उसके आगे देवता भी उसी प्रकार सिर झुकाते हैं जिस प्रकार रंक धनपति के समक्ष।

विष्णु पुराण कुम्भ–स्नान की तुलना अन्य शुभ–स्नानों से करता हुआ कहता है कि एक सहस्त्र कार्तिक स्नान, एक सौ माघ–स्नान एवं नर्मदा में किया गया एक कोटि वैशाख–स्नान के तुल्य एक कुम्भ स्नान का फल है–

सहस्त्रं कार्त्तिको स्नानं माघे स्नानं शतानि च।
वैशाखे नर्मदा कोटि कुम्भ स्नानेन तत्फलम्।।

अन्यत्र विष्णु पुराण इसकी महत्ता एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञ, एक शत–वाजपेय यज्ञ एवं पृथ्वी की एक लाख परिक्रमा में बराबर बताता है–

अश्वमेध सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च।
लक्षप्रदक्षिणा पृथिव्याः कुम्भ स्नानेन तत्फलम्।।

कुम्भ के समय किए गए श्राद्ध एवं जप–तप सभी पापों से विमुक्ति देने का सामर्थ्य रखते हैं, ऐसी वायु पुराण की मान्यता है –

श्राद्धे कुम्भे विमुंचंति ज्ञेयं पापं निषूदनम्।
श्राद्धं तत्राक्षयं प्रोक्तं जप्य होम तपांसि च।।

निष्कर्ष–

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पवित्र त्रिवेणी तट पर आयोजित होने वाले विश्व के सबसे बड़े धार्मिक व सांस्कृतिक समागम वृहद महाकुम्भ 2025 में प्रयागराज का विकास व सुन्दरता प्रत्यक्ष दृष्टिगत हो रही है। कुम्भ को 'एकता के महायज्ञ' के नाम से जाना जाता है। जैसा कि उपरोक्त अध्ययन में है कि कुम्भ मेले के कण–कण में आस्था का उल्लास दिखाई देता है। प्रयागराज धार्मिकता, ऐतिहासिकता और सांस्कृतिक धरोहर की त्रिवेणी है।

स्वतः अवलोकन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि वैश्विक परिदृश्य पर यह वृहद समागम अपनी एक अलग छवि व अविस्मरणीय छाप छोड़ जाएगा। यह विश्व का एकमात्र स्थल है जहाँ प्रतिवर्ष एक माह के लिए तंबुओं का सुन्दर नजारा व तम्बुओं का अस्थायी शहर बसता है। यहाँ रात का परिदृश्य मानो आसमान के तारे जमीन पर आ गये हैं। यहाँ की सुंदरता का जितना वर्णन किया जाए कम है।

गंगा द्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।
कलसाव्योहि योगोहयं प्रोच्यते शंकरादिभिः।।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. अग्नि पुराण, अध्याय 109
2. पद्म पुराण, उत्तर खण्ड, अध्याय 24.
3. महाभारत, आरण्यक पर्व, 85/14
   यत्रायजत भूतात्मा पूर्वमेव पितामहः।
   प्रयागमिति विख्यातं तस्माद् भरत सत्तम्।।
4. महाभारत, 13/27/48
   यथा सुराणां पितृणां च यथा स्वधा।
   सुधा यथा नागानां तथा गंगाजलं नृणाम्।।
5. स्कन्द पुराण, अवन्ति खण्ड, 35/24

6. स्कन्द पुराण, 31/1–10
7. प्रयाग माहात्म्य शताध्यायी, 51/53
मेष राशौ यदासौरिः सिंहचन्द्रबृहस्पतिः।
भास्करः श्रवणर्क्षे चेत् महामाघीति सा स्मृता।।
8. विष्णु पुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय–9; श्रीमद्भागवत पुराण, प्रथम खण्ड, अध्याय–8.
9. उत्तर प्रदेश सरकार, पत्रांक, 3966/9–1–2024–408057 दिनांक 25.11.2024
10. स्वयं के द्वारा एकत्रित आँकड़े।
11. मत्स्य पुराण, अध्याय 105–109.
12. प्रदीप कुमार केसरवानी, प्रयाग कुम्भ विश्व की सांस्कृतिक विरासत में प्रकाशित डॉ0 डी0 पी0 तिवारी का लेख, पुराणों में प्रयाग वर्णन, पृष्ठ 13–21.